ABSTRACT

Education is one of the crucial aspects of human resource development as it is considered a pathway to overcome social and economic barriers to progress. Desired steps in wake of the hour were taken by the Government of India in form of universalization of education, free school education, a mid-day meal scheme, setting minimum qualifications for teachers and launching various schemes such as Samagra Shiksha Abhiyaan, other scholarship schemes etc. to promote equity, excellence and inclusion in the education system. All these schemes bear fruit upon successful implementation under wise leadership. Leadership is a process whereby an individual influence a group of individuals to achieve a common goal. School leadership is considered an important area as reflected by the wide sources of literature and related policy documents. In the document of NISHTHA, the role of school leadership is considered indispensable in improving the quality of school education. In consideration of the significant role of school leadership for the academic performance of students, the objectives of this study were to identify the leadership practices, school culture and the professional capital of the high and low performing schools; to find out the relationship between leadership practices and the school culture, leadership practices and professional capital, school culture and the professional capital of the high and low performing schools; to study the difference between the Leadership practices, school culture, professional capital of high and low performing schools and to study the effect of leadership practices on the school culture and professional capital of high and low performing schools. The study is quantitative in nature and a descriptive survey research design was adopted for this study. The population of the study consisted of teachers and principals working in the high and low performing schools of districts Kulgam and Anantnag. The purposive sampling technique was used for the selection of sample. The sample of the study consists of 279 teachers and 21 principals working in the high and low performing schools of districts Anantnag and Kulgam. The tools used for the selection of data were: The Leadership Practices Questionnaire developed by the researcher, an adapted version of the School Culture Survey by Grunert and Valentine, 1998 and Professional Capital Survey prepared by Hargreaves and Fullan in 2012. The statistical techniques used for the analysis of data were correlation, t-test, regression and principal component analysis. The results of the study showed that the practices adopted by school

leadership of high performing schools were instructional support, collaboration and cooperation, professional development, leader acting as a role model and vision of the school while the leadership practices adopted by the low performing schools included collaboration and cooperation, professional development, involvement of the staff, leader acting as a role model, supervision of school activities and providing autonomy to the teachers. The features of school culture such as collaboration, cooperation, working in a single direction, commitment and involvement were common in high and low performing schools. The characteristics of professional capital were talent and expertise, way of working, way of taking decisions professional development and providing opportunities were common in high and low performing schools. The results of the study showed that there was a significant relationship between leadership practices and school culture; between leadership practices and professional capital; between school culture and professional capital of high and low performing schools. The results of the study also showed that there was a significant difference between the leadership practices, and school culture of high and low performing schools but no significant difference was found in the professional capital of high and low performing schools. The results further revealed that there was a significant effect of leadership practices on the school culture of high and low performing schools but there was no significant effect of leadership practices on the professional capital of high and low performing schools.

शोध सारांश

मानव संसाधन के विकास हेतु शिक्षा महत्त्वपूर्ण आयाम है। इसे समाजार्थिक बाधाओं के पार प्रगति का मार्ग भी माना गया है। भारत सरकार द्वारा शिक्षा-पद्धति में समानता ,उत्कृष्टता और समावेशन को प्रोन्नत करने के लिए शिक्षा का सार्वभौमिकरण, नि:शुल्क विद्यालय शिक्षा, मिड-डे-मील योजना, शिक्षकों की अनिवार्य न्यूनतम अर्हता और विभिन्न योजनाओं के समयानुकूल तरीके से लागू किया गया है, जैसे कि समग्र शिक्षा अभियान, अन्य छात्रवृत्ति की योजनाएं आदि। ये सभी योजनाएं दूरदर्शी नेतृत्व के अधीन सफलतापूर्वक लागू होने के कारण फलदायी रहीं। नेतृत्व एक प्रक्रिया इसमें जिसमें संयुक्त लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु एक व्यक्ति व्यक्तियों के समूह को प्रभावित करता है। संबंधित नीतिगत दस्तावेजों के ज्ञानसामग्रियों- की विशाल संपदा में विद्यालय नेतृत्व को महत्वपूर्ण आयाम निर्देशित किया गया हैं। निष्ठा(NISHTHA) के दस्तावेजों में विद्यालय योजनाओं की भूमिका का गुणवत्तापूर्ण विद्यालय शिक्षा के उन्नयन में अत्यंत उपयोगी माना गया है। छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में विद्यालयों की उपयोगी भूमिका को दृष्टिगत कर इस शोध का उद्देश्य श्रेष्ठ और निम्न प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों के नेतृत्व कौशल और विद्यालयी संस्कृति, नेतृत्व-पद्धति और व्यवसायिक पूँजी, विद्यालय संस्कृति और व्यवसायिक पूँजी के अंत: सूत्रों की पड़ताल करना, श्रेष्ठ एवं न्यून प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों के नेतृत्व कौशल, विद्यालय संस्कृति, व्यवसायिक पूँजी के बीच भिन्नता का अध्ययन करना और श्रेष्ठ एवं निम्न प्रदर्शन करने वाले विद्यालय संस्कृति और व्यवसायिक पूँजी पर नेतृत्व कौशल के प्रभाव का अध्ययन करना ,इस शोध में वर्णात्मक सर्वेक्षण शोध प्रक्रिया को अपनाया गया है और यह शोध अपनी प्रकृति में संख्यात्मक है। कुलगाम और अनंतनाग जिले में श्रेष्ठ एवं निम्न प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों के शिक्षकों एवं प्राचार्यों की संख्या पर यह शोध केंद्रित है। नमूने के चयन हेतु सोदेश्य नमूना-पद्धति अपनायी गयी। इसमें अनंतनाग और कुलगाम जिले के श्रेष्ठ एवं निम्न प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों के 21 शिक्षकों और 279 प्रधानाध्यापकों कोे अध्ययन में नमूने के रूप में लिया गया है। आंकड़े के चयन हेतु प्रयुक्त उपकरण थे -शोधार्थी द्वारा विकसित नेतृत्व कौशल संबंधी प्रश्न-तालिका में 1998ग्रूनेट और वैलेंटाइन द्वारा विकसित विद्यालय संस्कृति सर्वेक्षण का सिद्धांत और में हारग्रे 2012वेस और फुल्लन द्वारा तैयार व्यवसाय पूँजी सर्वेक्षण सिद्धांत। इसमें आंकड़ों के विश्लेषण हेतु को-रिलेशन ,टीटेस्ट- रिग्रेशन और प्रिंसिपल कॉम्पोनेट एनालिसिस जैसी सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यालय नेतृत्व द्वारा अपनायी गई पद्धतियों में निर्देशात्मक समर्थन, सहयोग एवं सहसंबंध, व्यवसायिक विकास, आदर्श नेतृत्वकर्ता के रूप में नेतृत्व- प्रदर्शन और विद्यालय की संकल्पना थे; जबकि निम्न प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों में

सहयोग और सहसंबंध, व्यवसायिक विकास, कर्मचारियों की भागीदारीआदर्श , नेतृत्वकर्ता के रूप में नेतृत्व, विद्यालय की गतिविधियों का निर्देशन और शिक्षकों की स्वायत्तता प्रदान करना थे। निम्न और श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों में सहयोग ,सहसंबंध, एकल दिशा में समरूप हिस्से थे। श्रेष्ठ एवं निम्न प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों में प्रतिभा और विशेषज्ञता, कार्य-पद्धती, निर्णय लेने की कुशलता, व्यवसायिक विकास और अवसरों की उपलब्धता के व्यवसायिक पूँजी के गुण थे। इस शोध से ज्ञात होता है कि श्रेष्ठ और निम्न प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों में नेतृत्व पद्धति और विद्यालय संस्कृत के मध्य ;नेतृत्व पद्धति और व्यवसायिक पूँजी के मध्य; विद्यालय संस्कृति और व्यवसायिक पूँजी के मध्य महत्त्वपूर्ण संबंध विद्यमान थे।

इस शोध के निष्कर्षों से यह भी ज्ञात हुआ है कि श्रेष्ठ और न्यून प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों में नेतृत्व पद्धति और विद्यालय संस्कृति के मध्य उल्लेखनीय भिन्नता है लेकिन श्रेष्ठ एवं न्यून प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों में व्यवसायिक पूँजी के संबंध में कोई भी उल्लेखनीय भिन्नता नहीं है। शोध के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ है कि श्रेष्ठ और न्यून प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों में विद्यालयी संस्कृति पर नेतृत्व पद्धति का व्यवसायिक पूँजी पर कोई भी उल्लेखनीय प्रभाव नहीं है।